श्री साईं महात्मय कथा

(धनधान्य, ऐश्वर्य, सुखद गृहस्थ जीवन, संतति एवं मोक्षदायिनी कथा)

(श्री साईं सच्चरित्र पर आधारित)

डॉ यतेंद्र शर्मा

श्री राम कथा संस्थान पर्थ,
ऑस्ट्रेलिआ – ६०२५

श्री साईं महात्मय कथा

(धनधान्य, ऐश्वर्य, सुखद गृहस्थ जीवन, संतति एवं मोक्षदायिनी कथा)

(श्री साईं सच्चरित्र पर आधारित)

डॉ यतेंद्र शर्मा

प्रकाशक

श्री राम कथा संस्थान पर्थ,
ऑस्ट्रेलिआ – ६०२५

Website: https://shriramkatha.org
Email: srkperth@outlook.com

विषय-सूची

समर्पण 4
श्री साईं वन्दना 5
प्रथम पूज्य श्री गणेश वंदना 6
श्री हनुमंत वंदना 7
श्री राम वन्दना 10
श्री साईं महात्मय कथा हेतु एवं विधि 11
भगवान् श्री साईं - अद्‌भुत अवतार 13
कष्ट एवं दुर्भाग्य निवारण 18
संतति प्रदान 22
फलश्रुति 25
आरती श्री साईं बाबा 29
श्री साईं संक्षिप्त जीवन परिचय 31

समर्पण

ॐ साईं नमो नमः, श्री साईं नमो नमः, जय जय साईं नमो नमः, सद्गुरु साईं नमो नमः

परम पूज्य श्री गुरुदेव साईं
को सादर समर्पित

श्री साईं वन्दना

ओं, ओं, ओं ।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वर : ।
गुरुः साक्षात परमब्रह्म, तस्मयी श्री गुरुवे नमः ।।

गुरु ही ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव शंकर महादेव हैं। गुरु परब्रह्म हैं। मैं गुरु को प्रणाम करता हूँ।

घेउनियां पंचारती। करुं बाबांसी आरती ।।
करुं साईं सी आरती ।।
उठा उठा हो बांधव । ओंवालूँ ओ रमाधव ।।
साईं ओ रमाधव ।। ओंवालूँ ओ रमाधव ।।
करुनीयां स्थीर मन । पाहूं गंभीर हें ध्यान ।।
साईंचें हें ध्यान ।। पाहूं गंभीर हें ध्यान ।।
कृष्णनाथा दत्तसाईं । जडो चित्त तुझे पायीं ।।
साईं तुझे पायीं ।। जडो चित्त तुझे पायीं ।।
घेउनियां पंचारती । करुं बाबांसी आरती ।।
करुं साईं सी आरती ।।

सच्चिदानंद श्री साईं नाथ महाराज की जय

प्रथम पूज्य श्री गणेश वंदना

ओं श्री गणेशाय नमः

ओं वक्रतुन्ड महाकाया, सूर्य कोटि समप्रभः ।
निर्विघ्नम कुरू मे देव, शुभ कार्येशू सर्वदा ।।

जै गणेश, जै गणेश, जै गणेश पाहिमाम ।
श्री गणेश, श्री गणेश, श्री गणेश रक्षमाम ।।
जै गणेश, पाहिमाम, श्री गणेश रक्षमाम ।
जै गणेश, जै गणेश, जै गणेश रक्षमाम ।।

श्री हनुमंत वंदना

ओं श्री हनुमंतए नमः

अतुलित बलधामम नमामि, स्वर्ण शैलाभ देहम नमामि ।
दनुजबल-कृषाणुम नमामि, ग्यानिनामग्रगणयम नमामि ।।
सकल गुणनिधानं नमामि, वानराणामधीशम नमामि ।
रघुपति-प्रिय-भक्तम नमामि, वात जातम नमामि ।।

श्री हनुमान चालीसा

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनऊं रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवनकुमार ।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ।।

जै हनुमान ज्ञान गुन सागर । जै कपीस तिहुं लोक उजागर ।।
रामदूत अतुलित बल धामा । अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुंडल कुंचित केसा ।।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै । कांधे मूंज जनेऊ साजै ।।
संकर सुवन केसरीनंदन । तेज प्रताप महा जग बन्दन ।।
विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर ।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्मरूप धरिसियहिं दिखावा। बिकट रूप धर लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर संहारे । रामचंद्र के काज संवारे ।।

लाय सजीवन लखन जियाये । श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा ।।
जम कुबेर दिगपाल जहां ते। कबि कोबिद कहि सके कहां ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा ।।
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना। लंकेश्वर भए सब जग जाना ।।
जुग सहस्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू ।।
प्रभुमुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लांघि गये अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।।
राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रक्षक काहू को डरना ।।
आपन तेज सम्हारो आपै । तीनहुँ लोक हांक तें कांपै ।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ।।
नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
संकट ते हनुमान छुड़ावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै । सोइ अमित जीवन फल पावै ।।
चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ।।
साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ।।
तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम-जनम के दुख बिसरावै ।।
अन्तकाल रघुबर पुर जाई । जहां जन्म हरि-भक्त कहाई ।।
और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ।।
संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ।।

जै जै जै हनुमान गोसाईं । कृपा करहु गुरुदेव की नाईं ।।
ये सत बार पाठ कर जोई । छूटहि बंदि महा सुख होई ।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय मंह डेरा ।।

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ।।

श्री राम वन्दना

ओं श्री श्रीरामचन्द्रए नमः

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजमन हरणभवभयदारुणं ।
नवकञ्जलोचन कञ्जमुख करकञ्ज पदकञ्जारुणं ॥१॥

कन्दर्प अगणित अमित छवि नवनीलनीरदसुन्दरं ।
पटपीतमानहु तडित रूचिशुचि नौमिजनकसुतावरं ॥२॥

भजदीनबन्धु दिनेश दानवदैत्यवंशनिकन्दनं ।
रघुनन्द आनन्दकन्द कोशलचन्द्र दशरथनन्दनं ॥३॥

शिरमुकुटकुण्डल तिलकचारू उदारुअङ्गविभूषणं ।
आजानुभुज शरचापधर सङ्ग्रामजितखरदूषणं ॥४॥

इति वदति तुलसीदास शङ्करशेषमुनिमनरञ्जनं ।
ममहृदयकञ्जनिवासकुरु कामादिखलदलगञ्जनं ॥५॥

श्री साईं महात्मय कथा हेतु एवं विधि

भगवान् श्री साईं के अनन्य भक्त श्री श्यामा जी (श्री माधव राव देशपांडे) एवं श्री हेमांड पंत (श्री गोविन्द राव दाभोलकर) जी की प्रार्थना पर उनको आशीर्वाद देते हुए जन कल्याण हेतु भगवान् श्री साईं बाबा ने 'श्री साईं सच्चरित्र' लिखने की श्री हेमांड पंत जी को अनुमति दे दी। श्री हेमांड पंत जी की संसार के उद्धार से ओत प्रोत प्रेम भरी वाणी सुन भगवान् श्री साईं बाबा बोले।

भगवान् श्री साईं उवाच

श्यामा, जो प्रेम पूर्वक मेरा नाम स्मरण करेगा, मैं उसकी समस्त वैध इक्षाओं को पूर्ण कर दूंगा। उसकी भक्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी। जो मेरी 'श्री साईं सच्चरित्र' अथवा 'श्री साईं महात्मय' का श्रद्धा पूर्वक पठन अथवा श्रवण करेगा, मैं हर प्रकार से सदैव उसकी मदद करूंगा। उन्हें इस जीवन में धनधान्य, ऐश्वर्य, सुखद गृहस्थ जीवन एवं संतति प्राप्त होगी, तथा जीवन उपरान्त मेरे धाम में वास मिलेगा। जो नियमित रूप से इन में से एक पुस्तक का भी पठन अथवा श्रवण करेगा, ऐसे भक्तों में सांसारिक वासनाओं और अज्ञान रूपी प्रवर्तियाँ नष्ट होंगीं। यह श्री कथा इस कलियुग के व्यस्त जीवन में भगवद्भक्ति, धनधान्य, ऐश्वर्य, सुखद गृहस्थ जीवन, संतति एवं मोक्ष प्राप्ति का एक सरल साधन होगी। श्यामा, दुःख, शोक, संताप आदि का हरण करने वाली मेरी इस कथा का पठन एवं श्रवण किसी भी समय, दिन, स्थान अथवा किसी भी स्थिति (जाग्रत, स्वप्न अथवा ध्यान) में स्वयं अथवा परिवार एवं मित्रों के

साथ किया जा सकता है। व्रत, यज्ञ, योग इत्यादि की कोई आवश्यकता नहीं।

भगवान् श्री साईं के जग उद्धार हेतु यह मधुर अमृतमय वाणी सुन श्यामा जी एवं हेमांड पंत जी गदगद हो गए, और उन्होंने श्री साईं बाबा के चरण पकड़ लिए। उन दोनों के मुख से एक साथ शब्द निकले, 'हे प्रभु, रक्षा करो, रक्षा करो, रक्षा करो'।

प्रार्थना

हे भगवान् श्री साईं हम सब श्रद्धा एवं सबूरी से शुद्ध ह्रदय से आपके समक्ष भक्तिभाव से उपस्थित हुए हैं। हमारे द्वारा अर्पित पुष्प, पंचामृत एवं नैवैद्य स्वीकार कीजिए। हे देवा, हम आपकी प्रेरणा से श्री साईं माहात्म्य का पठन एवं श्रवण करने एकत्रित हुए हैं। जन्म जन्मांतरों के कर्म-फल वशीभूत हम अज्ञानी इस माया संसार में भटकते रहते हैं, हम अज्ञानीओं को ज्ञान देकर शान्ति प्रदान करो तथा हमारा मार्ग प्रशस्त करो जिससे हम समाज के उत्थान के प्रति कार्य करते हुए इस जीवन में सुख, समृद्धि, संतति एवं सुखद पारिवारिक जीवन पाएं, और जीवांत में आप से मिलन हो।

श्री सद्गुरु साईंनाथार्पणमस्तु। शुभम भवतु ।

भगवान् श्री साईं - अद्‌भुत अवतार

परमभक्त श्री हेमान्ड पंत जी अनन्यभक्त श्री श्यामा जी से बोले, 'श्यामा जी, भगवान् श्री साईं की आप पर अत्यंत कृपा है तथा आप उनके अत्यंत घनिष्ठ एवं प्रिय भक्त हैं। हमें भी भगवान् श्री साईं बाबा के बारे में कुछ प्रकाश डालिए। श्री साईं बाबा कौन हैं, एवं उनका अवतार किस हेतु हुआ है?'

श्री श्यामा जी उवाच

हेमान्ड पंत जी, आप तो स्वयं एक ज्ञानी एवं महाभक्त हैं। मैं एक अनपढ़ देहाती आपको इस अवतार के बारे में क्या बताऊँ? फिर भी, अपनी छोटी सी बुद्धि से एवं भगवान् श्री साईं की प्रेरणा से कुछ छोटे मुँह बड़ी बात कहने का साहस कर रहा हूँ।

जब जब धर्म की हानि होती है और अधर्म की वृद्धि होती है, तब तब भगवान् विविध रूप में स्वयं अवतार लेते हैं अथवा अपने अंश को प्रतिनिधि के रूप में युग युग में इस धरा पर भेजते हैं।

जब जब होई धरम की हानि, बाढै असुर अधम अभिमानी ।
तब तब प्रभु धरि विविध शरीरा, हरों कृपानिधि सज्जन पीरा ।।

भगवान् अपने स्वयं के अवतार में अथवा भगवान् द्वारा भेजे हुए यह प्रतिनिधि तब पृथ्वी पर संतों की विपत्ति हरकर शान्ति स्थापित करने का कार्य करते हैं।

ऐसे ही भगवानान्श श्री साईं बाबा ने १९वीं सदी के मध्य में अवतार लिया। जैसा आप जानते ही हैं कि उनके जीवन का अधिकाँश भाग यहीं शिर्डी गांव में व्यतीत हुआ। उनके सानिध्य से शिर्डी ग्राम एक पवित्र तीर्थ बन गया। शान्ति उनका आभूषण है। ज्ञान की वह साक्षात प्रतिमा हैं। ऐहिक पदार्थों से उन्हें अरुचि है। सदैव आत्मचिंतन में ही निमग्न रहते हैं। स्वयं सिद्ध होकर भी साधक जैसा आचरण करते हैं। वे अति विनम्र, दयालु एवं अभिमानरहित हैं। उनका श्री पाद-सेवन करना ही त्रिवेणी प्रयाग तीर्थस्थल स्नान के समान है। उनके चरणामृत पान करने से समस्त इक्षाएं पूर्ण हो जाती हैं। ऐसी ही उनकी एक श्री लीला का मैं यहां श्री वर्णन करता हूँ जो उनकी श्री ईश्वर भक्ति की प्रतीक है, तथा शांति प्रदायिनी एवं मोक्ष दायिनी है।

एक बार श्री दास गणु जी महाराज ने श्री प्रयाग तीर्थ स्नान के विचार से वहां प्रस्थान हेतु भगवान् श्री साईं से आज्ञा माँगी। भगवान् श्री साईं बाबा ने कहा, 'इतनी दूर व्यर्थ में जाने की क्या आवश्यकता है? अपना प्रयाग तो यहीं पर है।'

आश्चर्य! महान आश्चर्य!! जैसे ही श्री दास गणु जी महाराज भगवान् श्री साईं के श्री चरणों में नतमस्तक हुए, उनके श्री चरणों से माँ गंगा, माँ यमुना और माँ सरस्वती की धाराएं वेग से प्रवाहित होने लगीं। यह चमत्कार देख श्री दास गणू महाराज के हृदय में भगवान् श्री साईं के प्रति अनन्य प्रेम और भक्ति उमड़ पडी। उनका कवि हृदय गाने लगा।

साईं रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना ।
जाना तुमने जगत पसारा, सब ही झूठ ज़माना ।।
साईं रहम नजर करना ....

मैं अँधा हूँ बन्दा आपका, मुझको प्रभु दिखलाना ।
मैं अँधा हु बंदा आप का मुझको प्रभु दिखलाना ।।
साईं रहम नजर करना ....

दास गनु कहे अब क्या बोलूं, थक गई मेरी रसना ।
साईं रहम नजर करना ....

भगवान् श्री साईं हर धर्म से परे एवं स्वयं सर्व-धर्म हैं। न वह हिन्दू हैं, न मुसलमान। वह अहम् एवं इन्द्रियजन्य सुखों को तिलांजली देकर पूर्णतः श्री ईश्वर की शरण में अखंड सच्चिदानंद हैं। 'ईश्वर मालिक' सदैव उनके होंठों पर रहता है। मूलतः भगवान् श्री साईं निराकार हैं, परन्तु भक्तों के प्रेमवश ही साकार रूप में प्रकट हुए हैं। वह वेद, वेदांत एवं उपनिषदों के ज्ञाता हैं एवं इन ग्रंथों की शिक्षा दिन प्रतिदिन ज्वलंत उदाहरणों द्वारा दिया करते हैं। जब श्री दास गणु जी महाराज को ईशावास्य-भावार्थबोधिनी का सम्पादन करते समय श्रीमद ईशोपनिषद का भावार्थ समझ में नहीं आ रहा था तो भगवान् साईं ने उन्हें श्री काका दीक्षित जी की अशिक्षित नौकरानी द्वारा यह ज्ञान दिलवाया। भगवान् श्री साईं की प्रेरणा से अशिक्षित नौकरानी द्वारा उन्हें ज्ञान मिला कि समस्त वस्तुएं ईश्वर से ओत प्रोत हैं। जो कुछ ईश-कृपा से प्राप्त है, उसमें ही हमें आनंद मानना चाहिए। हमें दृढ भावना रखनी चाहिए कि ईश्वर ही सर्व-शक्तिमान

हैं। उन्होंने जो भी हमें दिया है, वही हमारे लिए उपयुक्त है। पराए धन की तृष्णा की प्रवर्ति को लगाम लगाना आवश्यक है।

रूखी सूखी खाय कै ठंडा पानी पीव ।
देख पराई चूपरी मत ललचावे जीव ॥

भगवान् श्री साईं सब धर्मों का उचित आदर करते हैं। चाहे वह मुसलमान भाइयों का चन्दन समारोह अथवा उर्स हो, या हिन्दू भाईओं का श्री राम नवमी अथवा दशहरा, सभी उत्सवों को अपने मुसलमान एवं हिन्दू भक्तों के साथ हर्ष एवं उल्लास से मनाते हैं।

भगवान् साईं बाबा सर्व व्यापक एवं अत्यत दयालू हैं। यह एक घटना सन् १९१० में दीपावली के समय की है। इस शुभ अवसर पर धूनी के समीप बैठे हुए साईं बाबा अग्नि ताप रहे थे, तथा साथ ही धूनी में लकड़ी भी डालते जा रहे थे। धूनी प्रचण्डता से प्रज्वलित थी। कुछ समय पश्चात उन्होंने लकड़ियाँ डालने के बदले अपना हाथ धूनी में डाल दिया। हाथ बुरी तरह से झुलस गया। नौकर माधव तथा श्री माधवराव देशपांडे जी ने बाबा को धूनी में जब हाथ डालते देखा, तो तुरन्त दौड़कर उन्हें बलपूर्वक पीछे खींच लिया। श्री माधवराव देशपांडे जी ने बाबा से पूछा, ' देवा, आपने ऐसा क्यों किया?' बाबा शांत होकर कहने लगे कि यहाँ से कुछ दूरी पर एक लुहारिन जब भट्टी धौंक रही थी, उसी समय उसके पति ने उसे बुलाया। कमर से बँधे हुए शिशु का ध्यान छोड़ वह शीघ्रता से वहाँ दौड़ कर गई। अभाग्यवश शिशु फिसल कर भट्टी में गिर पड़ा। मैंने तुरन्त भट्टी में हाथ डालकर शिशु के प्राण बचा लिये हैं। मुझे

अपना हाथ जल जाने का कोई दुःख नहीं हैं, परन्तु मुझे हर्ष है कि एक मासूम शिशु के प्राण बच गये।

ऐसा दयामय अवतार है, भगवान् श्री साईं बाबा का।

श्री सद्गुरु साईंनाथार्पणमस्तु। शुभम भवतु ।

कष्ट एवं दुर्भाग्य निवारण

भगवान् श्री साईं बाबा अपने भक्तों के समस्त कष्ट एवं दुर्भाग्यों को दूर कर स्वयं उनकी रक्षा करते हैं। ऐसा भगवान् श्री साईं बाबा के जीवनकाल एवं उसके पश्चात भी होता आया है। भगवान् श्री साईं बाबा ने स्वयं कहा है, 'मेरी समाधी के बाद भी मेरी अस्थियां मेरे भक्तों की रक्षा करती रहेंगी एवं उनका सदैव मार्ग दर्शन करती रहेंगी।'

श्री साईं बाबा ने अपने प्रिय भक्त श्री दामू अन्ना जी को दो बार व्यापार में अधिक हानि से बचाकर उनका उचित मार्ग दर्शन किया। एक बार कपास के व्यापार में और दूसरी बार अनाज के क्रय-विक्रय में हानि से बचाया। उनके कष्टों को समाधान कर उन्हें शान्ति प्रदान की।

एक समय की कथा है कि उन्हीं के एक मित्र ने उनके घर चोरी कर उनकी समस्त धन राशि एवं विशेषकर उनकी पत्नी के पैतृक आभूषण जिनमें उनका मंगलसूत्र एवं पवित्र नथ भी सम्मिलित थी, चुरा ली। श्री दामू अन्ना जी ने भगवान् श्री साईं के चित्र के समक्ष रुदन कर उनसे मार्ग प्रदर्शन करने की प्रार्थना की जिससे उनकी चोरी हुई धन राशि मिल जाए।

आश्चर्य! अत्यंत आश्चर्य!! दूसरे दिन ही वह व्यक्ति समस्त धन राशि एवं गहनों का संदूक लौटाकर क्षमा प्रार्थना करने लगा।

भगवान् श्री साईं ने अपने एक गोवा के भक्त के घर उन्हीं के रसोइये द्वारा चुराई गई एक बड़ी धन राशि वापस दिलवा दी। जब एक बड़ी धन राशि के चोरी होने पर वह दिन रात रोते और दुःखी रहते थे, तब एक दिन साईं बाबा एक फकीर के रूप में उनके समक्ष प्रकट हुए। भगवान् श्री साईं बाबा ने उन्हें आश्वासन दिया कि अगर वह संकल्प कर अपना प्रिय भोजन तब तक के किए छोड़ दें जब तक कि उन्हें उनकी चुराई धन राशि वापस न मिल जाए, और धन राशि मिलने पर वह श्री साईं बाबा के दर्शनार्थ शिर्डी जाएं, तो अवश्य ही उनका चुराया हुआ धन शीघ्र ही उन्हें वापस मिल जाएगा।

चमत्कार! श्रेष्ठ चमत्कार!! इस संकल्प के कुछ समय पश्चात ही वह रसोइया समस्त धन राशि उन्हें वापस देकर अपनी भूल पर क्षमा प्रार्थना करने लगा।

श्री साईं बाबा के एक अनन्य भक्त श्री साठे जी को एक बार व्यापार में अत्यधिक हानि हुई। उन्हें आपराधिक मामलों में अंग्रेज़ सरकार कारागार में डालना चाहती थी। भगवान् श्री साईं की शरण में आने पर उनकी कृपा से उनकी समस्त प्रतिकूल परिस्थितिओं का विनाश हुआ एवं उन्हें व्यापार में फिर से प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। भगवान् श्री साईं के आदेश से 'श्री गुरु चरित्र पारायण' करने से उनका चित्त शांत एवं स्थिर हो गया, और वह समस्त भव बंधनों से मुक्त हो गए।

स्वतन्त्रता सेनानी, कांग्रेस सभा के सदस्य एवं अमरावती के सुप्रसिद्ध वकील श्री दादा साहेब खापर्डे जी को अंग्रेज़ सरकार ने देश द्रोह का आरोप लगाकर कारागार में डालना चाहा। वह

भगवान् श्री साईं के पास तत्काल शिर्डी आए। श्री साईं ने उन्हें अभय दान देकर उनकी रक्षा की। उन्हें शिर्डी में ही अपने पास निवास दिया। किसी भी पुलिस कर्मी का साहस नहीं था कि वह शिर्डी जाकर उन्हें बंदी बना सके।

श्री तात्या जी के प्राण रक्षा हेतु भगवान् श्री साईं ने अपना शरीर त्याग कर उनके प्राणों की रक्षा कर उन्हें जीवन दान दिया। शक १८८० के आश्विन मास में श्री तात्या जी बीमार पड़ गए और उन्होंने चारपाई पकड़ ली। उनकी स्थिति इतनी गंभीर हो गई कि वह भगवान् श्री साईं के दर्शनार्थ मस्जिद तक जाने में भी असमर्थ थे। जब श्री विजय दशमी का दिन निकट आया और उनकी मृत्यु सन्निकट दिखलाई देनी लगी, उसी समय एक विचित्र घटना घटित हुई। श्री तात्या जी की मृत्यु टल गई और उनके प्राण बच गए। उनके स्थान पर भगवान् श्री साईं बाबा स्वयं इस धरा से प्रस्थान कर गए।

जब श्री श्यामा जी को सर्प-दंश हुआ, तब भगवान् श्री साईं बाबा के सर्प विष को आदेश 'अरे ओ नादान बम्मन, ऊपर मत चढ़, सावधान ऐसा किया तो, हट दूर हट, नीचे उतर' ने श्री श्यामा जी को सर्प विष से मुक्त कर दिया।

हे भगवान् श्री साईं बाबा, आपने समय पर श्रीमती मैना ताई के प्रसव समय पर उनके प्राणों की रक्षा की। श्रीमती मैना ताई के प्रसव काल में जब उनकी स्थिति अत्यंत गंभीर हो गई थी तो आपने श्री रामगीर बुवा जी को उदी एवं आरती लेकर जामनेर श्रीमती मैना ताई के पितृग्रह जाने का आदेश दिया। श्री रामगीर बुवा जी के पास

उस समय केवल दो रुपये ही थे जो कठिनता से शिर्डी से जलगांव रेलवे स्टेशन तक के किराए के लिए ही पर्याप्त थे। ऐसी स्थिति में जलगांव से ३० मील दूर जामनेर तक जाना कैसे संभव होता? आपके श्री शब्द, 'ईश्वर देगा' ने श्री रामगीर बुवा जी को बल दिया, और उन्होंने प्रस्थान किया।

चमत्कार! घोर चमत्कार!! जलगांव रेलवे स्टेशन पहुंचने पर एक चपरासी द्वारा अपना नाम पुकारने पर उन्हें अत्यंत आश्चर्य हुआ। चपरासी ने उन्हें एक सुन्दर तांगे में बिठाया, नास्ता कराया तथा सुरक्षित जामनेर पहुंचा दिया। जामनेर पहुंचने पर वह चपरासी एवं तांगा दोनों ही अंतर्ध्यान हो गए। समय पर उदी को जल में मिलाकर श्रीमती मैना ताई को पिलाने एवं आरती गाने पर उनकी स्थिति में पूर्ण सुधार हुआ, और प्रसव कुशलता पूर्वक हो समस्त पीड़ा दूर हो गई।

श्री सद्गुरु साईंनाथार्पणमस्तु। शुभम भवतु ।

संतति प्रदान

हे भगवान् श्री साईं, आपने भाग्यविधान पलट अपने निःसंतान भक्तों को संतति प्रदान कर सुखद गृहस्थ जीवन दिया।

श्री दामू अन्ना जी की जन्म-कुंडली में संतान स्थान गृह में पापी नक्षत्र के स्थित होने के कारण उन्हें संतान सुख नहीं था। आपने आम्र-लीला के प्रभाव से अपनी यौगिक शक्ति द्वारा उन्हें चार पुत्र एवं चार पुत्रियां प्रदान कीं।

नांदेद के श्री रतन जी वालिया के संतान रहित गृहस्थ जीवन में भी पुत्र पुत्रियां देकर उनके जीवन को पुष्पमय बनाया। श्री दास गणु जी महाराज के सुझाव पर जब श्री रतन जी वालिया ने शिर्डी पहुंचकर शुद्ध हृदय से आपकी प्रार्थना की, 'हे देवा, अनेक आपत्तिग्रस्त लोग आपके पास आते हैं और आप उनके समस्त कष्ट तुरंत दूर कर देते हैं, यह कीर्ति सुनकर मैं भी बड़ी आशा से आपके श्री चरणों में आया हूँ। मुझे निराश मत कीजिए।'

भगवान् श्री साईं बाबा, आपने उनकी शुद्ध हृदय से कथित प्रार्थना सुनकर अपना वरद-हस्त उनके मस्तिष्क पर रख दिया तथा उदी देकर आशीर्वाद दिया, 'ईश्वर तुम्हारी इक्षा पूर्ण करेगा।'

आपके आशीर्वाद से उन्हें चार पुत्रियों का सुख प्राप्त हुआ।

आपने निःसंतान श्री राय बहादुर हरी विनायक साठे जी को पुत्र रत्न का आशीर्वाद दिया। आपके आशीर्वाद से उन्हें प्रथम दो कन्याएं एवं तृतीय बार पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई।

सोलापुर के श्री सखा राम औरंगाबादकर जी की पत्नी परिपक्व आयु में भी माँ न बन सकीं थीं। संतान प्राप्ति की इक्षा लिए उन्होंने सभी देवी देवताओं की पूजा-अर्चना एवं मनौतियां कीं, परन्तु निराशा ही हाथ लगी। जब वह आपके दर्शनार्थ शिर्डी पधारीं तो श्री श्यामा जी के हस्तक्षेप से उन्हें पुत्र प्राप्ति का आपका आशीर्वाद प्राप्त हुआ। आपके आशीर्वाद के एक वर्ष के अंतराल में ही उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। नवजात शिशु को लेकर तब वह आपका आशीर्वाद लेने शिर्डी आईं।

श्री सपतनेकर जी, जो प्रथम आपके प्रति अविश्वास के एक उदाहरण थे, अपने इकलौते पुत्र की मृत्यु हो जाने पर शुद्ध हृदय से अपने अविश्वास एवं व्यवहार पर क्षमा याचना हेतु सपत्नीक शिर्डी पधारे। तब आपने उन पर अत्यंत कृपा की। आपने एक गड़ेरन से वार्तालाप करते हुए श्री सपतनेकर जी को सम्बोधित करते हुए कहा, 'यह भला आदमी मुझ पर दोषारोपण करता है कि मैंने इसके पुत्र को मार डाला। क्या मैं लोगों के बच्चों के प्राण हरण करता हूँ? अब मैं एक काम करूंगा। अब मैं उसी बच्चे को फिर से इनकी पत्नी के गर्भ में ला दूंगा।' ऐसा कहकर आपने अपना वरद-हस्त श्री सपतनेकर जी के सर पर रखा और उन्हें सांत्वना दे कर बोले, 'यह चरण अधिक पुरातन एवं पवित्र हैं। जब तुम चिंतामुक्त होकर मुझ पर विश्वास करोगे, तभी तुम्हें अपने ध्येय की प्राप्ति होगी।'

आपके आशीर्वाद से श्री सपतनेकर जी को तीन पुत्रों की प्राप्ति हुई जिनके नाम श्री मुरलीधर, श्री भास्कर एवं श्री दिनकर थे।

हे भगवान् श्री साईं, इसी प्रकार आपने अनगिनत दुःखी परिवारों को सुखमय बनाया। हम सब भी आपके शरणागत हैं। प्रभु, हमें अपनी शरण में लीजिए। हम चातक पक्षी के समान सदैव आपकी कृपा दृष्टि की एक बूँद के लिए लालायित रहते हैं। हमारे अशांत हृदयों को शांत कीजिए।

श्री सद्गुरु साईंनाथार्पणमस्तु। शुभम भवतु ।

फलश्रुति

हे भगवान् श्री साईं, हम आपकी चरण वन्दना कर आपसे शरण की याचना करते हैं। आप ही इस अखिल विश्व के एकमात्र आधार हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप हमारी समस्त इच्छाएं शीघ्र ही पूर्ण करेंगे। आज निन्दित विचारों के तट पर माया-मोह के झंझावात से धैर्य रुपी वृक्ष की जड़ें उखड़ गई हैं। अहंकार रुपी वायु की प्रबलता से हृदय रुपी समुद्र में तूफान उठ खड़ा हुआ है जिसमें क्रोध और घृणा रुपी घड़ियाल तैर रहे हैं। अहंभाव एवं सन्देह रुपी नाना संकल्प-विकल्पों के भँवरों में निन्दा, घृणा और ईर्ष्यारुपी अगणित मछलियाँ विहार कर रही हैं। हम जानते हैं कि यघपि यह समुद्र अत्यंत भयानक है, परन्तु हमारे सदगुरु श्री साईं महाराज उसमें अगस्त्य मुनि स्वरुप ही हैं। वह हमें इस भव-सागर से पार उतार देंगे।

हे श्री सच्चिदानंद साईं महाराज, हम आपको साष्टांग प्रणाम करते हुए आपके चरण पकड़ सब भक्तों के कल्याणार्थ आपसे प्रार्थना करते हैं। हमारे मन की चंचलता और वासनाओं को दूर करो। हे प्रभु, ऐसा आशीर्वाद दीजिए कि आपके श्री चरणों के अतिरिक्त हमें किसी अन्य वस्तु की लालसा न रहे। आपका 'श्री साईं सच्चरित्र' अथवा 'श्री साईं महात्मय कथा' प्रत्येक घर पहुँचे, और इसका नियमित पठन एवं श्रवण हो। जो भी भक्त इन ग्रंथों का प्रेम पूर्वक पठन अथवा श्रवण करें, उनके समस्त कष्ट दूर हों।

भगवान् श्री साईं, आपने स्वयं ही तो कहा है,' मेरे चरित्र और उपदेशों के पठन एवं श्रवण मात्र से ही मेरे भक्तों के हृदय में श्रद्धा

जाग्रत होकर सफलतापूर्वक आत्मानुभूति एवं परमानंद की प्राप्ति हो जाएगी। विश्वास रखो, जो कोई मेरी लीलाओं का पठन एवं श्रवण करेगा, उसको मैं इस जीवन में समस्त सुख देते हुए अंत में मुक्ति प्रदान करूंगा। ऐसे भक्तों में सांसारिक वासनाएं और अज्ञान रूपी प्रवर्तियाँ नष्ट होंगी। मैं उन्हें मृत्यु के मुख से बचा लूंगा। सुख और शांति का यही सुलभ मार्ग है। इससे भक्तों के हृदय को शान्ति मिलेगी। जब ध्यान प्रगाढ़ और विश्वास दृढ हो जाएगा, तब अखंड चैतन्यघन से अभिन्नता प्राप्त हो जाएगी। केवल साईं, साईं, साईं, शब्दों के उच्चारण मात्र से उनके समस्त कष्ट एवं पाप नष्ट हो जाएंगे।

'जो भक्त मुझे नमन कर अनन्य भाव से मेरी शरण आ जाता है, उसे फिर और कोई साधना की आवश्यकता नहीं होती। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष उसे सहज ही प्राप्त हो जाते हैं। मैं उसे भक्तिमार्ग में लगाकर, कंकटाकीर्ण गड्ढों और खाईओं से बचाकर, उसे उसके ध्येय की ओर अग्रसर कर देता हूँ। मेरे भक्तों के घर अन्न तथा वस्त्रों का कभी अभाव नहीं होगा। यह मेरा वैशिष्ट्य है कि जो भक्त मेरी शरण आ जाता है और अंतःकरण से मेरा उपासक है, उसके कल्याणार्थ मैं सदैव चिंतित रहता हूँ।'

'न्याय, मीमांसा अथवा दर्शन शास्त्र इत्यादि के पढ़ने की भी कोई आवश्यकता नहीं है। जिस प्रकार नदी अथवा समुद्र पार करते समय नाविक पर विश्वास रखते हैं, उसी प्रकार मेरे पर विश्वास रखने से मैं भक्तों को भव-सागर से पार उतार देता हूँ। मेरे स्मरण के लिए किसी विशेष उपासना, मन्त्र, पंचाग्नि, तप, त्याग, अष्टांग योग इत्यादि की कोई आवश्यकता नहीं। मेरी श्री लीलालों का

स्मरण मात्र तुम्हें समस्त कष्टों से छुटकारा दिला मोक्ष की प्राप्त करा देगा।'

इस ग्रन्थ के पठन एवं श्रवण से अवश्य ही मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी। पवित्र जल में स्नान कर, श्री साईं बाबा के चित्र के समक्ष, इस ग्रन्थ का पठन एवं श्रवण करना चाहिए। हे पाठको एवं श्रोताओ, यदि सचमुच आप आवागमन से मुक्ति चाहते हो तो आप श्री साईं कथाओं का नित्य पठन एवं श्रवण कर उनके चरणों में प्रगाढ़ प्रीति विकसित करें। भगवान् श्री साईं कथा रुपी समुद्र का मंथन कर उसमें से प्राप्त रत्नों को सभी को वितरण करें। इससे आपको नित्य नूतन आनन्द का अनुभव होगा, और आप अधःपतन से बच जायेंगे। यदि भक्तगण अनन्य भाव से श्री साईं की शरण आ जाएंगे तो उनका ममत्व नष्ट होकर वह ईश्वर से अभिन्नता प्राप्त करेंगे। जिस प्रकार नदी समुद्र से मिलकर एकाकार हो जाती है, वह भी श्री साईं से एकाकार हो जाएंगे। यदि तीन अवस्थाओं (जागृति, स्वप्न और निद्रा) में से किसी एक अवस्था में भी श्री साईं चिन्तन करोगे तो सांसारिक चक्र से छुटकारा हो जायेगा। इसके अध्ययन से हर एक को अपनी श्रद्घा और भक्ति के अनुसार फल मिलेगा। इन दोनों के अभाव में किसी भी फल की प्राप्ति होना संभव नहीं है। यदि इस ग्रन्थ का आदरपूर्वक पठन अथवा श्रवण करोगे तो श्री भगवान् साईं प्रसन्न होकर आपको अज्ञान और दरिद्रता के पाश से मुक्त कर, ज्ञान, धन और समृद्धि प्रदान करेंगे। यदि ध्यानपूर्वक आप श्री साईं की लीलाओं का अध्ययन नियमित रूप से करते रहोगे तो आपको सुख और सन्तोष प्राप्त होगा, और सदैव श्री साईं चरणारविंदो का स्मरण बना रहेगा। इस प्रकार आप भवसागर से सहज ही पार हो जाओगे। इसके पठन एवं श्रवण से

रोगियों को स्वास्थ्य, निर्धनों को धन, दुःखित और पीड़ितों को सम्पन्नता मिलेगी तथा मन के समस्त विकार दूर होकर मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। जिस उत्साह, श्रद्धा और लगन के साथ आप इस ग्रन्थ का पठन अथवा श्रवण करेंगे, भगवान् श्री साईं वैसे ही आपको सेवा करने की बुद्धि प्रदान करेंगे।

श्री साईं, हम आपको प्रणाम करते हुए आपसे एक निवेदन करते हैं कि आपका मनोहर रूप सदैव हमारे नेत्रों के समक्ष रहे और हम सभी प्राणीओं में केवल आप ही के दर्शन करें।

एवमस्तु।

श्री सद्‌गुरु साईंनाथार्पणमस्तु। शुभम भवतु ।

आरती श्री साईं बाबा

आरती साईं बाबा, सौख्य दातार जीवा,
चरणरजतली ध्यावा दासा विसावा, भक्तां विसावा।
आरती साई बाबा .....

जालुनियाँ अनंग, स्वस्वरूपी राहे दंग,
मुमुक्ष जना दावी, निज डोला श्री रंग, डोला श्री रंग।
आरती साई बाबा .....

जया मनी जैसा भाव, तया तैसा अनुभव,
दाविसी दयाघना, ऐसी तुझी ही माव, ऐसी तुझी ही माव।
आरती साई बाबा .....

तुमचे नाम ध्यांता, हरे संसृति व्यथा,
अगाध तव करनी, मार्ग दाविसी अनाथा, मार्ग दाविसी अनाथा।
आरती साई बाबा .....

कलियुगी अवतार, सगुण ब्रह्म साचार,
अवतीर्ण झालासी, स्वामी दत्त दिगम्बर, स्वामी दत्त दिगम्बर।
आरती साई बाबा .....

आठा दिवसा गुरुवारीं , भक्ता करीति वारी,
प्रभुपद पहावया, भव भय निवारी, भव भय निवारी।
आरती साई बाबा .....

माझा निज द्रव्य ठेवा, तव चरणरज सेवा,
मांगडें हेचि आता, तुम्हां देवाधिदेवा, देवाधिदेवा।
आरती साई बाबा .....

इछित दीन चातक, निर्मल तोय निज सुख, पाजावें माधवा
या, संभाल आपुली भाक, आपुली भाक।
आरती साई बाबा .....

आरती साईं बाबा, सौख्य दातार जीवा,
चरणरजतली ध्यावा दासा विसावा, भक्तां विसावा।
आरती साई बाबा .....

श्री साईं संक्षिप्त जीवन परिचय
('आत्मिक अनुभव - एक कथा' पुस्तक से उद्धृत)

ऐसा माना जाता है कि महाराष्ट्र के पाथरी (पातरी) गांव में साईं बाबा का जन्म २७ सितंबर १८३० को हुआ था। साईं के जन्म स्थान पाथरी (पातरी) पर एक मंदिर भी बना हुआ है जो इसका प्रमाण स्वरुप है। श्री शशिकांत शांताराम गडकरी की पुस्तक 'सद्गुरु साईं दर्शन - एक बैरागी की स्मरण गाथा' के अनुसार साईं के पिता का नाम श्री गोविंद भाऊ और माता का नाम श्रीमती देवकी अम्मा बता गया है जो पाथरी के निवासी थे। पुस्तक में ऐसा विवरण है कि उनके पिता कश्यप गोत्र के यजुर्वेदी ब्राह्मण थे।

साईं का परिवार ब्राह्मण अवश्य था, परन्तु उनके पिता कर्म-काण्ड में निपुण ब्राह्मण नहीं थे। इसी कारण पुरोहिती न कर पा सकने पर अपना जीवन यापन श्रमिक कार्य से ही करते थे। साईं के चार भाई और भी थे। बड़ा ही निर्धन परिवार था। साईं के माता पिता जैसे तैसे श्रमिक कार्य करके अपना और अपने पांचों बच्चों का पेट पाल रहे थे। साईं के पिता का गांव हैदराबाद निज़ाम के साम्राज्य का एक भाग था। निज़ाम के साम्राज्य में मुस्लिमों का एक हथियारबंद संगठन था जिसे रज़ाकार कहा जाता था। यह रज़ाकार हिन्दूओं को बहुत कष्ट देते थे। उनके अत्याचार जब असहनीय हो गए तो कई हिन्दूओं के साथ साईं के माता पिता ने भी वह गांव छोड़ने का निश्चय किया। वह पंढरपुर आ गए। एक बार जीविका के लिए शहर को जाने हेतु जब उनका परिवार पंढरपुर के समीप बहती भीमा नदी को नाव से पार कर रहा था तो दुर्भाग्य से नाव पलट गई। कई यात्रीओं के साथ साईं के पिता भी भीमा नदी के

आगोश में समा गए। उसी समय नदी किनारे खड़े कई लोगों ने इन डूबते हुए यात्रीओं को बचाने का प्रयास किया, जिसमे एक सूफी संत वली फ़क़ीर भी थे। साईं की माता और उनके कुछ पुत्र डूबने से अवश्य बच गए पर अत्यंत निर्धन होने के कारण साईं की माता अपने बच्चों का पेट पालने में असमर्थ थीं। अतः फ़क़ीर वली के आग्रह पर उन्होंने अपने एक बच्चे को उन्हें सौंप दिया। उस समय साईं की आयु केवल ८ वर्ष की थी। सूफी संत फ़क़ीर वली तब उन्हें लेकर ख़्वाजा शमशुद्दीन गाज़ी की दरगाह पर इस्लामाबाद (अब पकिस्तान का एक भाग) आ गए। फ़क़ीर वली की वहां आकस्मिक मृत्यु हो गई। तब इस बच्चे को ख़्वाजा शमशुद्दीन गाज़ी की दरगाह में ही रह रहे एक अन्य सूफी संत फ़क़ीर रोशन शाह ने पालने का उत्तरदायित्व लिया। फ़क़ीर रोशन शाह बच्चे को लेकट तदुपरांत अजमेर आ गए। अजमेर में इस बच्चे ने सूफी मत से प्रभावित इस्लाम का अध्ययन किया। इसके साथ साथ ही ख़्वाजा चिश्ती की दरगाह में रहने वाले एक हक़ीम साहेब से औषधियों का ज्ञान भी प्राप्त किया। इस्लाम धर्म के पवित्र ग्रन्थ क़ुरान को भी इस बच्चे ने यहीं मुखाग्र कर लिया। कुछ समय बाद फ़क़ीर रोशन शाह इस बच्चे के साथ इलाहाबाद आए, जहां दुर्भाग्य से हृदयाघात से उनका भी निधन हो गया। फ़क़ीर रोशन शाह की मृत्यु के बाद फिर से यह बच्चा अनाथ हो गया। यह बच्चा तब गंगा नदी किनारे अनाथ की तरह भिक्षा मांगकर अपना जीवन निर्वाह करने लगा। उसी समय इलाहबाद में एक संतों का सम्मेलन हुआ, जिसमें नाथ सम्प्रदाय के संत भी थे। इस बच्चे का झुकाव नाथ संप्रदाय और उनकी शिक्षाओं की ओर हुआ। यह बच्चा तब नाथ संप्रदाय के प्रमुख से मिला। उनके साथ संत समागम और सत्संग किया। संत सम्मलेन की समाप्ति पर नाथ सम्प्रदाय के संतों

ने अयोध्या की यात्रा की। यह बच्चा भी उनके साथ अयोध्या आ गया। यहां नाथ पंथ के प्रमुख ने इस बच्चे को नाथ सम्प्रदाय के शिष्य की पहचान के रूप में एक चिमटा (सटाका) भेंट किया। नाथ संत प्रमुख ने उनके कपाल पर चंदन का तिलक भी लगाया, और कहा कि वे हर समय इसका धारण करके रखें। इस बच्चे ने जीवनपर्यंत तिलक धारण तो अवश्य किया, परन्तु चिमटा (सटाका) एक अपने अत्यंत प्रेमी और शिष्य हाज़ी बाबा को भेंट कर दिया। अयोध्या यात्रा के बाद नाथपंथी तो अपने पर डेरे चले गए लेकिन यह बच्चा फिर एक बार अकेले रह गया।

बच्चे को अपने जन्म स्थान पाथरी का कुछ कुछ स्मरण था, अतः वह चल दिया पाथरी के लिए इस आशा में कि उसकी माता अथवा परिवार का कोई सदस्य तो वहां अवश्य ही मिल जाएगा। पाथरी पहुंचने पर इस बच्चे को पता चला कि वहां उसके परिवार का अब कोई सदस्य नहीं रहता। उनके बारे में भी किसी को कुछ पता नहीं है। इस बच्चे के परिवार के घर के पास एक चाँद मियाँ का घर था। उनकी पत्नी चाँद बी इस बच्चे से मिलकर बड़ी प्रसन्न हुईं, और उसके रहने और खाने पीने की व्यवस्था हेतु इस बच्चे को समीप के गांव सेलू (सेल्यु) के वैंकुशा आश्रम में ले गई। उस वक्त इस बच्चे की आयु १५ वर्ष की रही होगी। इस बच्चे से कुछ प्रश्न पूछने के बाद और उसकी प्रतिभा से प्रभावित हो तब वैकुंशा बाबा ने इस बच्चे को अपने आश्रम में प्रवेश दे दिया। बाद में इस बच्चे को उन्होंने अपना शिष्य भी बना लिया। कहते हैं कि वैकुंशा बाबा ने अपनी महासमाधि से पूर्व इस बच्चे को अपनी सारी दिव्य शक्तियां दीं। उसके पश्चात बच्चे को सब 'बाबा' नाम से सम्बोधित करने लगे।

जब यह बच्चा वैकुंश बाबा के आश्रम में निवास कर रहा था तो एक दिन अत्यंत अप्रिय घटना घटी। वैकुंश बाबा जब पंचाग्नि तपस्या की तैयारी कर रहे थे, उस समय कुछ मुस्लिम कट्टरपंथी लोग इस बच्चे पर ईंट-पत्थर फेंकने लगे। बच्चे को बचाने के लिए वैंकुशा बाबा सामने आ गए। इस प्रयास में उनके सिर पर एक ईंट लग गई। वैंकुशा बाबा के सिर से रक्त निकलने लगा। इस बच्चे ने तुरंत ही एक कपड़े से उस रक्त को साफ किया। वैंकुशा बाबा ने वही कपड़ा इस बच्चे के सिर पर तीन लपेटे देकर बांध दिया और कहा कि ये तीन लपेटे तुम्हें मुक्ति, ज्ञान एवं सुरक्षा प्रदान करेंगे। जिस ईंट से वैंकुशा बाबा को चोट लगी थी, इस बच्चे ने उसे उठाकर अपनी झोली में रख लिया। इसके बाद इस बच्चे ने जीवन पर्यन्त इस ईंट को अपना सिरहाना बनाया।

स्वस्थ्य होने के पश्चात वैंकुशा बाबा ने इस बच्चे को बताया कि एक बार, ८० वर्ष पूर्व, वह स्वामी समर्थ रामदास गुरुदेव की चरण-पादुका के दर्शन करने के लिए सज्जनगढ़ गए थे। वापसी में वह एक ग्राम शिर्डी में रुके थे। उन्होंने वहां एक मस्जिद के पास नीम के पेड़ के नीचे ध्यान लगाया था। उसी समय समर्थ स्वामी गुरु रामदास जी के उन्हें दर्शन हुए थे। तब समर्थ स्वामी गुरु रामदास जी उन्हें बतलाया था कि एक दिन मेरे शिष्यों में से एक शिर्डी में रहेगा जिसके कारण शिर्डी एक तीर्थ क्षेत्र बनेगा। वैकुंशा बाबा ने आगे कहा कि वहीं शिर्डी में मैंने समर्थ स्वामी गुरु श्री रामदास जी की स्मृति में एक दीपक भी जलाया था, जो अभी भी वहां नीम के पेड़ के नीचे एक शिला की आड़ में रखा है। इस वार्तालाप के बाद वैकुंशा बाबा ने बच्चे को तीन बार सिद्ध किया हुआ दूध पिलाया।

इस दूध को पीने के बाद बच्चे को चमत्कारिक अष्टसिद्धि शक्तियों की प्राप्ति हुई और वह एक दिव्य पुरुष बन गए। उन्हें परमहंस होने की अनुभूति हुई। वैंकुशा बाबा के महासमाधि लेने के पश्चात इस बच्चे ने जिसे अब सब 'बाबा' नाम से सम्बोधित करने लगे थे, इस आश्रम में रुकने का कोई महत्व नहीं समझा और वैंकुशा बाबा के निर्देशानुसार शिर्डी की ओर चल दिए। इस समय उनकी आयु कोई २२ - २३ वर्ष के लगभग रही होगी।

शिर्डी पहुँच उन्होंने अपना आसन उसी नीम के पेड़ के तले लगाया जिसका उल्लेख वैंकुशा बाबा ने किया था। कुछ समय वह शिर्डी में रहे, पर एक दिन अदृश्य हो गये।

ऐसा कहा जाता है कि बाबा शिर्डी से निकल पंचवटी गोदावरी के तट पर पहुंचे जहां उन्होंने कुछ समय तक तप किया। यहां बाबा स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी से मिले और उनके आश्रम पर कुछ दिनों निवास किया। तद्पश्चात वह शेगांव जा पहुंचे जहां वे गजानन महाराज से मिले। वहां कुछ दिन रुकने के बाद बाबा देवगिरी के जनार्दन स्वामी की कुटिया पर पहुंचे। वहां कुछ दिन विश्राम करने के बाद वह माणिक प्रभु के आश्रम में माणिक्यापुर चले गए। माणिक प्रभु उस समय के इस क्षेत्र के महान संत थे। उनसे सत्संग प्राप्त कर बाबा बीजापुर होते हुए नरसोबा की वाडी पहुंच गए। यहां बाबा ने दत्त अवतार नृसिंह सरस्वती के चरण-पादुका के दर्शन किए। यहीं कृष्णा नदी के किनारे एक युवा को तपस्या करते देखा तो उसे आशीर्वाद दिया, और कहा कि शीघ्र ही तुम बड़े संत बनोगे। यही युवक आगे चलकर स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती के

नाम से प्रसिद्ध हुए। स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती ने मराठी में लिखित अपनी पुस्तक 'गुरु चरित्र' में इसका विवरण दिया है।

इसके पश्चात बाबा सज्जनगढ़ पहुंचे जहां समर्थ गुरु स्वामी श्री रामदास जी महाराज की चरण-पादुका के दर्शन किए। वहां से निकलकर विविध सूफी फ़क़ीरों की दरगाह, हिन्दू संतों की समाधि इत्यादि के दर्शन करते हुए बाबा अहमदाबाद पहुंच गए। यहां वह सूफी संत सुहाग शाह बाबा की दरगाह पर कुछ दिन रहे। बाबा अहमदाबाद से भगवान कृष्ण की नगरी द्वारिका जा पहुंचे। यहीं उन्होंने तय किया कि शिर्डी में वे अपने निवास का नाम 'द्वारिकामाई' रखेंगे। द्वारिका से बाबा प्रभाष क्षेत्र गए, जहां भगवान कृष्ण ने अपनी देह छोड़ी थी।

अब बाबा ने निश्चय कर लिया कि समय आ गया है उनका शिर्डी में प्रवास करने का, अतः वह वापस शिर्डी चल दिए। राह में शिर्डी के पास ही एक गांव में कुछ समय के लिए वह चाँद पाटिल के घर रहे। उन्हीं दिनों चाँद पाटिल के एक निकट सम्बन्धी की बारात शिर्डी गाँव गयी, जिसके साथ बाबा भी आए। कहा जाता है कि चाँद पाटिल के सम्बन्धी की बारात जब शिर्डी गाँव पहुँची थी तो खंडोबा के मंदिर के सामने ही बैल गाड़ियाँ खोल दी गईं, और बारात के लोग वहीं उतरने लगे। वहीं एक श्रद्धालु व्यक्ति श्री म्हालसपति ने तरुण फकीर के तेजस्वी व्यक्तित्व से अभिभूत होकर उन्हें 'साईं' कहकर सम्बोधित किया। धीर धीरे शिर्डी में सभी लोग उन्हें 'साईं बाबा' के नाम से ही पुकारने लगे। इस प्रकार वे 'साईं' नाम से प्रसिद्ध हो गये। विवाह संपन्न हो जाने के बाद बारात

तो वापस लौट गयी, परंतु बाबा नहीं लौटे। वह शिर्डी में ही एक जीर्ण शीर्ण मस्जिद में रहने लगे और जीवन पर्यन्त वहीं रहे।

साईं बाबा के शिर्डी निवास, उनके चमत्कार एवं रहन सहन की विस्तृत जानकारी श्री गोविंदराव रघुनाथ दाभोलकर द्वारा लिखित 'श्री साईं सच्चरित्र' पुस्तक से मिलती है। श्री दाभोलकर जी ने इस पुस्तक की रचना सन १९१० में साईं बाबा के जीवन काल से ही प्रारम्भ कर दी थी। सन १९१८ में उनके महासमाधी लेने के पश्चात इस पुस्तक का' शिर्डी साईं बाबा संस्थान' द्वारा प्रकाशन किया गया।

साईं बाबा ने अपने जीवन में सूफी मत के अनुसार 'एकेश्वरवाद' के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित किया। उनका नारा था, 'सब का मालिक एक ईश्वर ही है'। अंधविश्वासों के विरुद्ध कर्मकांड इत्यादि से दूर सभी के दुःख दर्द हरना उनके जीवन का क्रम था। समाज के सभी वर्गों, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, में भाईचारा स्थापित हो, यही उनका लक्ष्य रहा।

शिर्डी में साईं बाबा अपना अधिकतर समय हिन्दू संतों एवं मुस्लिम फ़क़ीरों के साथ ही बिताते थे। उन्होंने किसी के साथ कभी भी कोई व्यवहार धर्म के आधार पर नहीं किया। उन्होंने महासमाधी तक नाथ संप्रदाय के नियमों का भी पालन किया। हाथ में जल का कमंडल रखना, धूनी रमाना, हुक्का पीना, कान बिंधवाना, सिर पर चंदन लगाना और भिक्षा पर ही निर्भर रहना, ये सब नाथ पंथी सम्प्रदाय के संतों की निशानी हैं। साईंबाबा यह सब कर्मकांड करते थे, अतः यह उनका नाथपंथी सम्प्रदाय से लगाव होना

प्रमाणित करता है। इसके साथ ही साईं बाबा सिर पर सदैव कफनी बांधते थे। यह सूफी संतों का प्रतीक है जो स्मरण दिलाता रहता है कि एक दिन हम सभी को ईश्वर के पास ही जाना है। वह जीवन भर एक जीर्ण शीर्ण मस्जिद में ही रहे। साईं बाबा पूजा, पाठ, ध्यान, प्राणायाम और योग पर ध्यान न दे, समाज सेवा, विशेषकर निर्धनों की मदद करना, जड़ी-बूटियों एवं भभूती से लोगों की निःशुल्क चिकित्सा करना एवं ईश्वर से प्रेम का ही प्रचार करते थे। भोजन करने से पहले फातिहा भी पढ़ते थे। इस प्रकार वह सूफी संतों द्वारा निर्धारित सभी नियमों का भी पालन करते थे।

सूफी संतों को प्रणाम।

नेत्र मूँद चिंतन करूँ, चंहु ओर दिखें त्रिसंत ।
मगन होत हिय तब, जब सुमरें नाम श्रीकंत ।।

कहत सनातन धर्म, रट ब्रह्मा विष्णु महेश ।
हृदयपट पर गए समा, सब संतन के नरेश ।।

करजोड़ विनती करूँ, हे त्रिमूर्ति भगवान ।
सदा हिय आदर रहे, हर नर संत समान ।।

करूँ शत शत नमन, निज़ामुद्दीन श्रीसंत ।
धन्य खुसरो अमीर, पा सको उनके मंत ।।

शिष्य रामानंद जी, हे संत कबीर प्रणाम ।
एकेश्वर दयामयी, ज्ञान दियो जन आम ।।

ग़रीब नवाज़ ख़्वाजा, करें दूर सब दुःख ।
जब हिय में उठत, ख़्वाजा प्रेम की भूख ।।

नमन साबिर-पाक, हैं संयम की मिसाल ।
दें लंगर भूखों को, स्वयं खाएं वृक्ष छाल ।।

वंदन शिर्डी साईं, कियो सब धर्मन में मेल ।
दीये जलाए जल से, न दियो बनियन तेल ।।

डॉ यतेंद्र शर्मा - सन १९५३ में एक हिन्दू सनातन परिवार में जन्मे डॉ यतेंद्र शर्मा की रूचि बचपन से ही सनातन धर्म ग्रंथों का पठन पाठन एवं श्रवण में रही है। संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा उन्होंने अपने पितामह श्री भगवान् दास जी एवं नरवर संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सालिग्राम अग्निहोत्री जी से प्राप्त की और पांच वर्ष की आयु में महर्षि पाणिनि रचित संस्कृत व्याकरण कौमुदी को कंठस्थ किया। उन्होंने तकनीकी विश्वविद्यालय ग्राज़ ऑस्ट्रिया से रसायन तकनीकी में पी.अच्.डी की उपाधी विशिष्टता के साथ प्राप्त की। सन १९८९ से डॉ यतेंद्र शर्मा अपने परिवार सहित पर्थ ऑस्ट्रेलिया में निवास कर रहें हैं, तथा पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के खनन उद्योग में कार्य रत हैं।

सन २०१६ में उन्होंने अपने कुछ धार्मिक मित्रों के साथ एक धार्मिक संस्था 'श्री राम कथा संस्थान पर्थ' की स्थापना की। यह संस्था श्री भगवान् स्वामी रामानंद जी महाराज (१४वीं- १५वीं शताब्दी) की शिक्षाओं से प्रभावित है तथा समय समय पर गोस्वामी तुलसी दास जी रचित श्री राम चरित मानस एवं अन्य धार्मिक कथाओं का प्रवचन, सनातन धर्म के महान संतों, ऋषियों, माताओं का चरित्र वर्णन एवं धार्मिक कथाओं के संकलन में अपना योगदान करने का प्रयास करती है।